लघु कथा

मंगलसूत्र

डॉ रीना प्रताप सिंह
सहायक आचार्य, हिन्दी
वर्धमान कॉलेज, बिजनौर
मो॰ – 9410432574

मंगलसूत्र का नाम सुनते ही मन में काले काले मोतियों के बीच सोने सा चमकता हुआ प्रेम , विश्वास और जन्म-जन्मातर तक अपने प्रियतम के साथ सुख दुख के क्षणों को एक दूसरे के अंतरमन में जीने का सुंदर सपना उमड़ आता है । यह एक ऐसा हार है जिसके हर एक मोती में सिर्फ जीत ही छुपी होती है। छुपा होता है एक दूसरे के प्रति राधा - कृष्ण जैसा निश्चल , निस्वार्थ और अटूट प्रेम । मेरे लिए मंगलसूत्र केवल सोने से जड़ा हार नहीं अपितु अनकहे शब्द , अनछुए जज़्बात, मंगलसूत्र के इन काले मोतियों में छुपा एक दूसरे के प्रति अटूट विश्वास जिसकी कल्पना भी कर पाना सामान्य जन के लिए कठिन कार्य है, ऐसा ही मधुर सपना था। जब हम कोई भी वस्तु खरीदते हैं उसके लेने से महीनों पहले कभी कभी तो बचपन से ही उस वस्तु को अपना सपना मानकर उसी में जीने लगते है, और जब वो सपना पूरा होने के निकट आता है तो हर पल बस उसी में खोए रहना ही मन को आनंदित करता रहता है। जीवन, पाने का ही नाम नहीं है अपितु अपने सपने , अपने जीवन को अपने प्रेम में विलीन कर देना ही सच्चे मोती सा सच्चा और मधुर रिश्ता है। मैं खुद को अपने सपनों को भूल गई थी परिवार बच्चों की जिम्मेदारी से हमेशा बंधी रही । मैं क्या थी क्या हूं कब ऐसी हो गई बदलती परिस्थिति ने कभी पता ही नही लगने दिया । अपने लिए बचपन से ही एक नया आसमां तलाशती थी कभी कभी बचपन की यादें मन को झकजोर कर रख देती थी पर कुछ देर बाद ही सब शांत हो जाता था । कोई ना मन की सुनने वाला ना किसी से मन की बातें कह पाती थी की मैं और मेरा मन भी कुछ चाहता है । जब मैं छोटी थी तभी से मुझे मंगलसूत्र बहुत पसंद था तब तक यह भी नही जानती थी की इसे विवाहोपरांत पहना जाता है । मैं हमेशा सोचती थी काश मेरा भी मंगल सूत्र आ जाए जिसे पहनकर मैं उस अहसास का अनुभव कर सकूं जिसके लिए अभी तक सिर्फ सुना या पढ़ा था। जब भी मैं किसी को मंगलसूत्र पहने देखती तो मुझे लगता की अभी इससे लेकर पहन लूं या खरीद लाऊं लेकिन दुनियादारी के झूठे रिश्ते निभाते निभाते सारे सपने सारे अहसास कब खत्म हो गए पता ही नही लगा ।अचानक एक दिन मेरे जीवन में कुछ ऐसा हुआ जो मेरे भाग्य रेखा से कोसों दूर था परंतु माता रानी को यही स्वीकार था की मैं अपने जीवन के अंधेरे में मंगलसूत्र के काले मोतियों के बीच में सोने सा चमकता उजाला देखूं । शायद इसलिए ही मेरे मन में एक बार फिर से मंगलसूत्र का विचार ना जाने कहां से आ गया और मैने अपनी मित्र को बिना सोचे ही बोल दिया मेरी मित्र मेरे लिए कुछ भी कर देती थी कभी किसी रिश्ते की कमी उसने मुझे महसूस नहीं होने दी बिना मेरे बोले मेरे मन को समझकर सब पूरा होने लगा । उसने मुझे कहा की मैं आज बाजार जाकर अपने लिए मंगलसूत्र खरीद लाऊं उसकी बात सुनकर मैं पल भर को अवाक सी रह गई और चुपचाप उसे देखती रही क्योंकि मैं तो यह भी भूल गई थी की मैने उसे यह बात बता दी है उसने मुझे कई बार कहा और मैने उसे बिना कारण बताए ही मना कर दिया। परंतु मेरा मन व्याकुल हो गया जो मैं सोचती थी क्या वो भी भगवान ने मेरे लिए सोच लिया था कुछ देर सपने में खोने के बाद सहसा होश आया मै सोचती थी मेरा साथी खुद अपने हाथों से मेरे लिए मंगलसूत्र खरीद कर लाए खरीदते समय उसके हर मोती को देखे , उसको छुए उसमें अपना निश्चल प्रेम और अपना अहसास और विश्वास भरके उनकी बाहों के अतिरिक्त मेरे गले में क्या शोभा देगा यह देखकर जो मेरे लिए उपयुक्त है उसे मेरे गले में डाल दें। बस मेरी यही इच्छा थी कि हर बात में उनका अहसास मुझे मिल जाए क्योंकि हमारा रिश्ता सिर्फ अहसास और विश्वास से ही बना था । मैं खुद को इस तरह से भूल गई थी की मुझे क्या चाहिए ये ही नहीं पता रहता है मेरे मित्र ने मेरी पहचान मुझसे कराई मेरे सपनों को जिंदा करके उन्हें खुद ही पूरा भी किया फिर यह मंगलसूत्र भी उसके उसी प्रेम का प्रतीक था जिसके लिए उसने बार बार लाने की जिद्द बांध रखी थी। इससे पहले कभी पैसे नही होते थे तो कभी याद

ही नहीं होता था। जिम्मेदारियों का पहाड़ जैसे मेरे जीवन में मुंह फैलाए हर समय मुझे निगलने को तैयार रहता था पर कभी हिम्मत न हारते हुए निरंतर आगे बढ़ती गई। कहते हैं न की समय एक सा नहीं रहता हर दिन बदलता है शायद इसलिए ही मेरे जीवन में अकस्मात इतने सारे परिवर्तन मेरे मित्र की वजह से एक साथ हुए जिनमें मंगलसूत्र की बात करना ही मेरे सपने को पूरा करने जैसा था। अपने प्रियतम के साथ उनकी आंखों के हर सपने को सारे सुख दुख को उनके विश्वास , प्रेम और उनके सभी जिम्मेदारियों को मैं मंगलसूत्र के मोतियों में बांधकर और खुद को पूरी निष्ठा सच्चाई से उसमे बंधकर उन्हें पूरा करना चाहती थी। प्रेम के रंगों से अपने प्रियतम का जीवन भरना चाहती थी। अब जब भी सही समय आएगा तब अपने इस सपने को अवश्य ही अपने प्रियतम के साथ मिलकर पूरा करेंगे और आखिरी सांस तक मंगलसूत्र के मोतियों की तरह इस रिश्ते को चमकाते रहेंगे। क्योंकि अब " मैं ही मैं " नही हूं तो मेरे सपने भी मेरे नहीं है मेरा सर्वस्व मेरे इस प्रेम और विश्वास से ओत प्रोत मेरे प्रियतम का , मुझे जन्म जन्मांतर तक अपने में समेटता हुआ वो मंगलसूत्र है।